सीबीएसई सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स द्वारा सीबीएसई स्कूल के टॉपरों के सम्मान समारोह में में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 20 जून 2024, गुरुवार	समय : 11:00 AM	स्थान : बोरझार, गुवाहाटी

- सीबीएसई सहोदय स्कूल कॉम्प्लेक्स के अध्यक्ष **डॉ. एन.के. दत्ता जी**,
- सचिव **डॉ. बंदना बरुवा जी**,
- कोषाध्यक्ष **श्री जुलग चंद्र बोरा जी**,
- कार्यकारिणी समिति के सदस्य **श्री पी.एस. रेड्डी जी**,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- संगठन के अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यगण,
- मेरे प्रिय विद्यार्थियों,
- उपस्थित शिक्षकों एवं अभिभावकगण
- देवियों और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार !

1. सर्वप्रथम इस समारोह में सम्मानित होने वाले मेधावी विद्यार्थियों को मेरी हार्दिक बधाई। मैं इन विद्यार्थियों के अभिभावकों और शिक्षकों को भी बधाई देना चाहूंगा, जिनकी देख-रेख में और सहयोग से ये बच्चे सफलता हासिल कर सके।

   मैं विद्यार्थियों के इस बधाई समारोह का आयोजन करने और मुझे इसमें आमंत्रित करने के लिए सी.बी.एस.ई सहोदय, गुवाहाटी चैप्टर को धन्यवाद देता हूँ। नि:संदेह इस तरह के कार्यक्रमों से छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन मिलता और उन्हें भविष्य में और बेहतर करने की प्रेरणा मिलती है।

2. मुझे बताया गया है कि इस समारोह में सी.बी.एस.ई पाठ्यक्रम से 2024 में 10वीं और 12वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले गुवाहाटी के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के 50 विद्यार्थियों को सम्मानित किया जा रहा है।

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम उनकी कड़ी मेहनत को सम्मानित कर रहे हैं और साथ ही अन्य छात्रों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 2012 में स्थापित सी.बी.एस.ई सहोदय, गुवाहाटी चैप्टर द्वारा पहली बार विद्यार्थियों की उपलब्धियों का जश्न मनाने और उन्हें सम्मानित करने के लिए यह समारोह आयोजित किया है। मुझे विश्वास है कि यह संस्था आगे भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित करना जारी रखेगी।

3. मित्रो,

हम सभी जानते हैं कि शिक्षा सभी के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करने का महत्वपूर्ण मार्ग है। यह एक व्यक्ति को उसके मानसिक, शारीरिक और आत्मिक स्तर को सुधारने में भी मदद करती है।

अच्छी शिक्षा के बिना हमारा जीवन अधूरा है, क्योंकि शिक्षा हमें सही सोचने और सही निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। आज के इस प्रतिस्पर्द्धा वाली दुनिया में, शिक्षा मनुष्य की भोजन, कपड़े और आवास के बाद प्रमुख अनिवार्यता बन गई है। जितना अधिक हम अपने जीवन में ज्ञान प्राप्त करते हैं, उतना ही अधिक हम अपने जीवन में वृद्धि और विकास करते हैं।

4. शिक्षा केवल ज्ञानार्जन करने तक ही सीमित नहीं है। इसका अर्थ खुश रहने, दूसरों को खुश करने, समाज में रहने, चुनौतियों का सामना करने, दूसरों की मदद करने, बड़ों की देखभाल करने, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने के तरीकों को सीखना भी है।

मैं समझता हूं कि शिक्षा व्यक्ति की क्षमता को उजागर करने और उसके समृद्ध भविष्य के निर्माण की एकमात्र कुंजी है। हमारी सरकार ने हमेशा शिक्षा को प्राथमिकता दी है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है।

हमारी सरकार शिक्षा के विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रही है। असम के स्कूलों में अच्छी शिक्षा व्यवस्था लागू करने के लिए कई महत्वपूर्ण और सराहनीय कदम उठाए गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत गुणगत शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी, कौशल विकास पर आधारित शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है ताकि युवा पीढ़ी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपनी शिक्षा और कौशल का उपयोग देश व समाज के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अपना योगदान दे सके।

5. मित्रो,

किसी राष्ट्र की ताकत और जीवन शक्ति उसके युवाओं के हाथों में होती है। युवा सकारात्मक परिवर्तन के अग्रदूत हैं। उनमें बेहतर भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक ऊर्जा, उत्साह और रचनात्मकता होती है। इसलिए उन्हें अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने और उसका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।

यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनमें आत्मविश्वास जगाएं और सफलता हासिल करने के लिए जोखिम उठाने और निडरता से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें।

6. 19वीं सदी के भारतीय दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता, और महान विचारक स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि युवा भारत और दुनिया के उत्थान के लिए प्रेरक शक्ति होते हैं। उनका मानना था कि युवाओं के भीतर छिपी शक्ति का यदि उपयोग किया जाए और उसे महान आदर्शों की ओर निर्देशित किया जाए, तो समाज में गहरा परिवर्तन आ सकता है।

स्वामी जी ने युवाओं में चरित्र निर्माण, नैतिक अखंडता और आत्मविश्वास की मजबूत भावना के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की थी, जो न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के साथ कर्तव्य और आत्मनिर्भरता की भावना को भी बढ़ावा दे।

स्वामी विवेकानन्द जी ने युवाओं की एक ऐसी पीढ़ी की कल्पना की थी, जो निडर, निःस्वार्थ और मानवता की सेवा के लिए प्रतिबद्ध होगी। वे चाहते थे कि देश के युवाओं में मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो।

7. भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है। विश्व की 65 प्रतिशत युवा आबादी हमारे देश में निवास करती है। हमारी युवा पीढ़ी भारत का असली धन हैं। इसलिए हमारे युवाओं की प्रतिभा को देश के विकास की दिशा में लगाना होगा। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हम सबको आगे आना होगा।

इसमें दो राय नहीं कि बच्चों के व्यवहारिक और शैक्षणिक विकास में अभिभावकों और गुरुजनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वे ही बच्चों को सही राह पर चलना सिखाते हैं। शिक्षण संस्थानों की तरह सामाजिक संस्थाएं और अन्य गैर-शिक्षण संस्थाएं भी विद्यार्थियों के विकास और पढ़ाई के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने में अपना योगदान दे सकती है।

8. मुझे खुशी है कि सी.बी.एस.ई. सहोदय जैसे असम में कई ऐसी संस्थाएं हैं, जो प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक शिक्षा को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभा रही हैं। ये संस्थाएं समय-समय विभिन्न तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर बच्चों को प्रोत्साहित कर रही हैं।

9. मित्रो,

देश की प्रगति में विद्यार्थी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। सशक्त राष्ट्र के निर्माण में उन्हें अपना दायित्व सुनिश्चित कर निरंतर प्रयासरत् रहना चाहिए। छात्रशक्ति में ही राष्ट्र की शक्ति निहित है, जो तभी संभव है, जब विद्यार्थी कुशल व्यक्तित्व और कुशल नेतृत्व का गुण धारण करेंगे।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्वशक्ति के रूप में अग्रसर है और भारत के युवाओं के लिए स्वयं को साबित करने का यही श्रेष्ठ अवसर है। उन्हें विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए स्वयं को योग्य बनाना होगा।

10. आज जो विद्यार्थी हैं, वे ही कल भारत के नागरिक होंगे। इसलिए देश का संपूर्ण दायित्व विद्यार्थियों के ही ऊपर है, क्योंकि भारत की उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं की उन्नति और उत्थान पर निर्भर करता है। अत: विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने भावी जीवन का निर्माण बड़ी सतर्कता और सावधानी के साथ करें।

विद्यार्थियों की आंखों में अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपनी धर्म-संस्कृति के विकास का सपना होना चाहिए। जो विद्यार्थी राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए बोझ के समान होते हैं।

विद्यार्थी का मुख्य लक्ष्य पढ़ाई और शिक्षा ग्रहण करना होता है। भली भाँति शिक्षा ग्रहण करके ही वह सुचारू रूप से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकेगा।

11. मित्रो,

प्रौद्योगिकी वर्तमान समाज के लिए एक वरदान है। प्रौद्योगिकी के कारण हमारी जीवन शैली में कई बड़े बदलाव आए हैं। हमारे कार्य करने के तरीके सुगम हो गए हैं। हालाँकि, प्रौद्योगिकी के नकारात्मक प्रभावों को भी देखा जा सकता है।

युवा इन तकनीकी सुविधाओं से अत्यधिक आकर्षित हो रहे हैं। विशेषकर वे सोशल मीडिया पर अपना अत्यधिक और बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। इसलिए मेरा आप सभी विद्यार्थियों को परामर्श है कि आप अपने सुरक्षित और सफल भविष्य के लिए प्रौद्योगिकी और तकनीकों का बुद्धिमतापूर्वक उपयोग करें तथा ज्ञान और कौशल अर्जित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करें।

12. मेरे प्रिय विद्यार्थियों,

हम सभी को अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। छात्रों के रूप में, आप सभी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आप अध्ययन करते समय अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए अनुशासन और प्रभावी समय प्रबंधन के साथ कड़ी मेहनत करें।

सफलता आपको कभी भी 1 दिन में नहीं मिलती है, लेकिन एक दिन जरूर मिलती है। जिस तरह दिन और रात एक जैसे नहीं होते, उसी तरह हमारे जीवन के सफर में भी कई उतार-चढ़ाव आते हैं। परंतु, वे ही सफल होते हैं, जो अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगातार आगे बढ़ते रहते हैं।

इसलिए मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि आप दृढ़ संकल्प, समर्पण और विश्वास के साथ अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए आगे बढ़ें।

13. मैं यह कहना चाहूंगा कि आप सफल हो सकते हैं। आपकी सफलता आपके उत्साह, मेहनत और विश्वास पर निर्भर करती है। अपनी सोच और कार्यों में सकारात्मक रहें और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें।

आप सदैव अपने रचनात्मक और नेतृत्वपूर्ण गुणों को विकसित करने का प्रयास करें। आपसी सहयोग की भावना का पोषण करें। इसके साथ ही, उन लोगों की पहचान करने का भी प्रयास करें, जो आपको प्रेरित कर सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रेरणादायक आचरणों को अपने व्यक्तिगत, शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन में अपनाने का प्रयास करें।

एक और महत्वपूर्ण और आवश्यक गुण है आत्मनिरीक्षण करना। आप अपनी बुराइयों को खोजने तथा उन्हें सुधारने की क्षमता विकसित करें।

मैं इसके साथ ही आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपनी संस्कृति को याद रखें और नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें। अच्छा पढ़ा-लिखा होने का

मतलब केवल अच्छे नम्बर और ग्रेड हासिल करना नहीं होता है, हालांकि इसका अर्थ जीवन में अच्छा और सामाजिक व्यक्ति बनना भी होता है।

14. अंत में मैं पुन: समारोह में सम्मानित होने वाले मेधावी विद्यार्थियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और भविष्य के उनके कार्य के लिए उन्हें शुभकामनाएं देता हूँ।

मैं सी.बी.एस.ई सहोदय, गुवाहाटी चैप्टर के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को एक बार फिर इस कायर्क्रम का आयोजन करने के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद,

जय हिन्द।